एकाग्रता से प्राप्तियाँ

एकाग्रता से सर्व शक्तियों की प्राप्ति होती है।
एकाग्रता से नवीनता की इन्वेन्शन कर सकते हैं।
एकाग्रता से किसी भी आत्मा का आह्वान कर सकते हो।
एकाग्रता से किसी भी आत्मा को दूर बैठे सहयोग दे सकते हो।
एकाग्रता से किसी भी आत्मा की आवाज को कैच कर सकते हो।
एकाग्रता से किसी भी आत्मा का मैसेज उस आत्मा तक पहुँचा सकते हो।
एकाग्रता से श्रेष्ठता और स्पष्टता स्वत: होगी।
एकाग्रता से स्वत: ही एक बाप दूसरा न कोई यह अनुभूति होती है।
एकाग्रता से परखने की शक्ति स्वत: ही बढ़ती है
एकाग्रता एक बाप में सारे संसार की सर्व प्राप्तियों की अनुभूति कर सकते हो।
एकाग्रता से अप्राप्त, अशान्त, दु:खी, रोगी आत्मा को दूर बैठे भी शान्ति, शक्ति, निरोगीपन का वरदान दे सकते हो।
एकाग्रता की शक्ति से सर्व आत्माओं की भटकती हुई बुद्धि को सहज एकाग्र कर सकते हो।
एकाग्रता की शक्ति सहज निर्विघ्न बना देती है।
एकाग्रता की शक्ति अव्यक्त फरिश्ता स्थिति की अनुभूति कराती है।
एकाग्रता की शक्ति से स्वत: ही सर्व प्रति स्नेह, कल्याण, सम्मान की वृत्ति रहती है।
एकाग्रता की शक्ति सर्व प्रति भाई-भाई की दृष्टि स्वत: बना देती है।
एकाग्रता की शक्ति हर आत्मा के सम्बन्ध में स्वमान के कर्म सहज अनुभव कराती है।
एकाग्रता सहज सफलता की चाबी है।
एकाग्रता अनेक तरफ का भटकना सहज ही छुड़ा देती है।
एकाग्रता शक्तिशाली स्थिति का अनुभव कराती है।
एकाग्रता बाप समान स्थिति का अनुभव कराती है।
एकाग्रता सिद्धि स्वरुप बनाती है।
एकाग्रता विश्व कल्याण करने का सहज साधन है।
एकाग्रता एकरस स्थिति का सहज अनुभव कराती है।
एकाग्रता सदा उड़ती कला की अनुभूति कराती है।
एकाग्राता अर्थात्:- 1. एक की याद में रहना। 2. एक बाप के साथ लग्न में मग्न रहना।
3. एक ही संकल्प में टिक जाना। 4. सदा निव्यर्थ संकल्प और निर्विकल्प।
एकाग्रता का आधार:- 1. साइलेन्स की शक्ति 2. अन्तर्मुखता 3. मन की कन्ट्रोलिंग पॉवर
एकाग्रता की विधि:- 1. एकान्तवासी बनना। 2. व्यर्थ संकल्पों को शुद्ध संकल्पों में परिवर्तन करना।
3. ज्ञान का मनन चिन्तन करना। 4. ईश्वरीय लगन को बढ़ाना।
5. सारे दिन में बीच-बीच में निराकारी, अशरीरी बनना। 6. अमृतवेले को पॉवरफुल बनाना।
7. आत्मिक दृष्टि का अभ्यास करना। 8.पवित्रता में सम्पूर्ण बनना।